मुख्य परीक्षा

प्रश्न- जाति व्यवस्था क्या है? इसके ऐतिहासिक परिदृश्य को बताते हुए, जाति व्यवस्था की विशेषताओं की व्याख्या करें।

(250 शब्द)

What is caste system? Elucidating its historical scenario, explain the characteristics of caste system.

(250 Words)

मॉडल उत्तर

- भूमिका में जाति व्यवस्था को बताएं।
- अगले पैराग्राफ में इसके ऐतिहासिक परिदृश्य को बताएं।
- फिर अगले पैराग्राफ में जाति व्यवस्था की विशेषताओं की चर्चा करें।
- अंत में संक्षिप्त निष्कर्ष दें।

जाति व्यवस्था एक सामाजिक बुराई है, जो प्राचीन काल से भारतीय समाज में मौजूद है। वर्षों से लोग इसकी आलोचना कर रहे हैं लेकिन फिर भी जाति व्यवस्था ने हमारे देश की सामाजिक और राजनीतिक व्यवस्था पर अपनी पकड़ मजबूत बनाए रखी है।

वर्ण व्यवस्था, सामाजिक असमानता का एक स्वरूप है जिसमें जन्म के आधार पर व्यक्ति के विशेषाधिकार एवं निर्योग्यताएँ सुनिश्चित हो जाता है। अनेक इतिहासकारों के अनुसार आर्य लोग मध्य एशिया से आये थे। ये लोग अपनी बेहतर सैन्य क्षमता (घोड़ा, तीर, धनुष और भाला) के कारण यहाँ के मूल निवासियों (अश्वेत)को पराजित करने में सफल रहे, चूंकि आर्य तीन वर्णों (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य) में विभाजित थे। उन्होंने यहाँ के मूल निवासियों को वर्ण व्यवस्था में शामिल कर चतुर्थ वर्ण व्यवस्था विकसित की। जैसे-जैसे संख्या बढ़ी वैसे-वैसे व्यवसाय बढ़े एवं वर्णों से जाति और जाति से उपजातियाँ बनने लगीं तथा भारत में 4 वर्णों से 5000 जाति एवं उपजाति बन चुकी हैं। जाति व्यवस्था, वर्ण व्यवस्था की व्यहारिक एवं स्थानीय अवधारणा है।

जाति व्यवस्था की प्रमुख विशेषताएँ:-

धार्मिक आधार:- हिन्दू धर्म ऋग्वेद के 10 वें मण्डल पुरुष सूक्त श्लोक के अनुसार-हिंदू देवता ब्रह्मा के मुख, भुजा, जांघ तथा पैरों से क्रमशः ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तथा शूद्र की उत्पति हुई है।

आनुवांशिक व्यवस्था:- पश्चिमी विचारक नेसफील्ड मानते हैं कि जाति व्यवसायिक समूह है। जिसे एक पीढ़ी दूसरी पीढ़ी से हस्तांतरित करती है और कोई जाति अपना व्यवसाय नहीं बदल सकती।

अंतः विवाहित:- अंत का अर्थ होता है 'के भीतर' प्रत्येक सदस्य के लिए अपने जाति के सदस्य से ही विवाह करना अनिवार्य होता है और कुछ विषम परिस्थितियों में व्यक्ति अनुलोम विवाह (उपजाति) को स्वीकृत करता है।

खान-पान निषेध:- पूरी जाति व्यवस्था रोटी-बेटी संबंध से चलती है। भोजन करने और विनियम के विस्तृत नियम होते

हैं जो जाति व्यवस्था और उसके नियमों को सुनिश्चित करती है।

जाति पंचायत:- प्रत्येक जाति की एक पंचायत होती है, जो यह सुनिश्चित करती है कि जाति के सदस्य जातीय नियमों की अवहेलना न करें और ऐसा करने पर उन्हें दण्डित किया जाता है।

जजमानी व्यवस्था:- यह जाति व्यवस्था का आर्थिक पक्ष है जिसके माध्यम से विभिन्न जातियाँ अपनी सेवा तथा वस्तुओं का आदान-प्रदान करती हैं।

उपरोक्त वर्ण एवं जाति व्यवस्था की विशेषताएँ परम्परागत हैं। ब्रिटिश शासन और उसके पश्चात् वर्ण एवं जाति व्यवस्था में निम्नलिखित कारणों से वर्ण एवं जाति व्यवस्था परिवर्तित तथा कमजोर होने लगीं।

अंत में संक्षिप्त निष्कर्ष दें।